NATIONAL INSTITUTE OF HYDROLOGY
ROORKEE- 247667 (U.P.)

डा० कोटा श्री रामशास्त्री
निदेशक

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
रूड़की-२४७६६७ (उत्तरांचल)

संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी संस्थान हिन्दी की वार्षिक पत्रिका 'प्रवाहिनी' का सफलता पूर्वक प्रकाशन कर रहा है.

लगभग पांच दशक पहले भारत की संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया था. स्वतंत्रता के पूर्व राष्ट्र को एकमत करने, एकीकरण में योगदान करने, स्वाधीनता का उद्घोष करने, तथा जन-जन में संचार-तंत्र अथवा सम्पर्क सूत्र के रूप में जितना योगदान हिन्दी नें किया है, उतना शायद ही किसी और भाषा का है. यही कारण है कि स्वतंत्रता सेनानियों ने इसे सहर्ष अपनाया. इसका चहुमुखी विकास हुआ तथा विज्ञान, प्रोद्यौगिकी, साहित्य, प्रशासन और प्रबन्धन आदि क्षेत्रों में इसके माध्यम से रचनात्मक कार्य सरल हो गया. आज हिन्दी राजभाषा के रुप में सम्मानित है. सरकारी और गैरसरकारी संस्थाये इसे पूर्ण विकसित करने में अपना अभूतपूर्व योगदान कर रही हैं, और इसके सकारात्मक परिणाम भी मिलने लगे हैं. अब इसे व्यपाक स्वीकृति मिली हुई है.

सूचना क्रान्ति के इस वर्तमान युग में अन्य राष्ट्रों के बढते प्रभुत्व और प्रतिस्पर्धा के बीच हमें अपनी उत्कृष्टता, प्रगति और विकास के ऐसे मार्ग ढूढनें हैं, जो हमारे राष्ट्र को विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में खड़ा कर सके. राजभाषा हिन्दी का योगदान इस महान एवं पुनीत कार्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है. हम सबका यह परम कर्तव्य है कि हम सब मिलकर निष्ठा से सार्थक प्रयास करें.

मैं इस पत्रिका के नौवें अंक के सफ़ल सम्पादन और समय से प्रकाशन हेतु इससे जुड़े समस्त लेखकों, रचनाकारों तथा संपादक मंडल को धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इसे सुरुचिपूर्ण बनाने में अपना अमूल्य योगदान दिया है. मैं आशा व्यक्त करता हूँ कि विगत अंकों की भाँति यह अंक भी विद्वान पाठकों के आशाओं के अनुरुप होगा.

(कोटा श्री रामशास्त्री)

हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि माननीया श्रीमती निरुपमा गौंड अपने विचार व्यक्त करते हुए

मुख्य अतिथि माननीया श्रीमती निरुपमा गौंड संस्थान की हिन्दी पत्रिका 'प्रवाहिनी' का विमोचन करते हुए

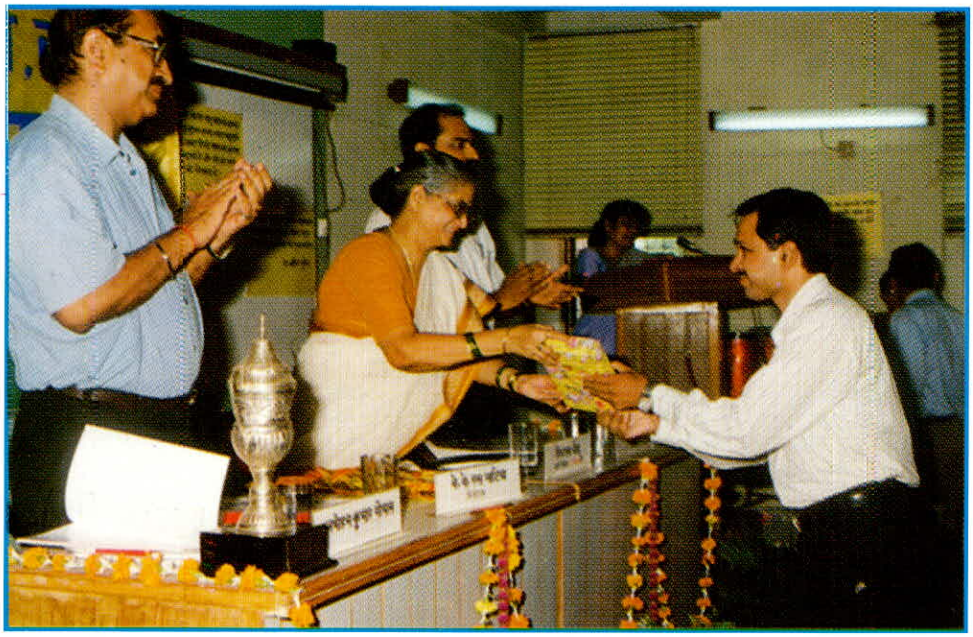

मुख्य अतिथि माननीया श्रीमती निरुपमा गौंड हिन्दी सप्ताह के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित करते हुए

हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर संस्थान के व्याख्यान कक्ष में बैठे गणमान्य अतिथिगण, संस्थान के अधिकारी व कर्मचारी